Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मुगलकालीन भारतीय दरबारियों का ऐतिहासिक अध्ययन (बाबर से बहादुर शाह जफर द्वितीय तक)

डॉ. आकाश ताहिर*

* सहा.प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (इतिहास) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, शास.कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, रतलाम (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – यह शोध पत्र बाबर से लेकर बहादुरशाह जफर तक मुगल दरबारों में कार्यरत भारतीय दरबारियों देशी एवं स्थानीय अफसरों के स्वरूप, उनके सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि, भर्ती–प्रक्रिया, अधिकार–सीमाएं, पद–संरचना, मंसबदारी, जागीर व्यवस्था, दरबार–शैली और समय के साथ उनके बदलते राजनैतिक सम्बन्धों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि किस प्रकार स्थानीय भारतीय सामग्री स्थानीय राजभूमि, सामाजिक किस्में, हिन्दू/स्थानीय नायकों का समावेश, मुगल केंद्रीय सत्ता में सम्मिलित हुई और कैसे यह सम्मिलन मुगल शासन की कार्यप्रणाली व दीर्घकालिक स्थायित्व/क्षय दोनों में निर्णायक रहा।

प्रस्तावना – भारतीय उपमहाद्वीप का मुगल काल (1526 –1857) राजनीतिक, सांस्कृतिक और प्रशासनिक रूप से अत्यंत समृद्ध था। इस काल के मुगल दरबार में भारतीय जातियों के अनेक पदाधिकारी कार्यरत थे, जिन्होंने लोक प्रशासन, सैन्य नेतृत्व, कला–संस्कृति और कुटनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके केन्द्र में सम्राट और उसका दरबार न केवल सत्ता का प्रतीक था, बल्कि प्रशासन, सैन्य संगठन, सांस्कृतिक संरक्षण और सामाजिक एकीकरण का एक जटिल तंत्र भी था।

शोध प्रश्न और शोध पद्धति – मुगल दरबार में भारतीय दरबारी ब्राह्मण, कायस्थ, राजपूत, स्थानीय मुस्लिम तथा अन्य स्थानीय कुल–जातीय समूह किस प्रकार सत्ता ढांचे में समाहित हुए उनकी भूमिकाएं क्या रही, और समय के साथ उनकी स्थिति कैसे बदली?

पद्धति:

1. प्राथमिक स्रोतों का भाषिक व संदर्भगत परीक्षण– विशेषकर आईन–ए–अकबरी समकालीन दरबानी तुजुक व पत्र,
2. द्वितीयक इतिहासकारों के विश्लेषण– जदुनाथ सरकार के प्रशासन–विशेष लेखन केम्ब्रिज न्यू हिस्ट्री–जॉन एफ. रिचर्डस आदि।
3. सामूहिक विश्लेषण व तुलनात्मक रूपांकन अलग अलग शासकों के दरबारों में भारतीय दरबारियों की भूमिकाओं का कालानुक्रमिक तुलनात्मक अध्ययन।

मुगल दरबारों में तुर्की, मंगोल, फारसी, अफगान और भारतीय परंपराओं का अनूठा संगम देखने को मिलता है। धीरे–धीरे इसमें हिंदू दरबारियों की भी बड़ी भूमिका बन गई जिसने इसे बहु–सांस्कृतिक और बहु–धार्मिक स्वरूप प्रदान किया। यही कारण है कि मुगल दरबार का अध्ययन केवल राजनीतिक इतिहास तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह सामाजिक–सांस्कृतिक इतिहास को भी स्पष्ट करता है।

मुगल दरबार को समझने के लिए जरूरी है मंसब–निजाम और जागीरी/जमींदारी प्रणाली को समझना, जो सत्ता के वितरण, सैन्य सेवा और वेतन/भूमि–भोग का आधार बनी। अकबर के शासनकाल में मंसब व्यवस्था का औपचारिकरण हुआ। सम्राट मंसब, दरजा देने के द्वारा शासकीय सेवक/सैन्यकर्मियों को श्रेणीबद्ध करता और जागीरों के माध्यम से उन्हें राजस्व अधिकार दिए जाते थे। मंसब व्यवस्था ने यह सुनिश्चित किया कि दरबारी सीधे सम्राट के प्रति उत्तरदायी हों। इसने देसी/स्थानीय कुलों के शोषण व सामंजस्य दोनों के लिए स्थान बनाया। दरबार की व्यवस्था और उसमें भारतीय दरबारियों की स्थिति समय–समय पर बदलती रही। बाबर और हुमायूं काल में विदेशी तुर्की–मंगोल तत्व हावी रहे, किंतु अकबर ने इसे सर्वाधिक संगठित रूप दिया।

बाबर के दरबार के भारतीय दरबारी – बाबर–काल (1526–1530)में मुगल सत्ता वैषम्य से आरम्भ हुई एक छोटे सैन्य नायक के द्वारा उपनिवेश निर्माण। बाबर स्वयं तुर्की मध्य एशियाई परम्परा से आए थे। परन्तु हिन्दुस्तानी भू–राजनीति में टिकने के लिए उन्होंने स्थानीय राजाओं के साथ गठबंधनों की नीति अपनाई। बाबर के संस्मरण बाबरनामा में स्थानीय पाक्षिकता, दलबंदी और स्थानीय राजपरिवारों के साथ उसकी अन्त:क्रिया स्पष्ट है–जो दर्शाता है कि प्रारम्भिक चरण से ही स्थानीय भारतीय, राजस्थानी/पंजाबी/हिंदुस्तानी, अमीरों का महत्व रहा। बाबर का दरबार मुख्यत: सैनिक और सामंती सरदारों (तुर्की, मंगोल, और कुछ अफगान) परआधारित था। उस समय दरबार का स्वरूप अस्थिर और गतिशील था क्योंकि बाबर अभी अपनी सत्ता को स्थिर करने में लगे हुए थे।

मुगल वंश की नींव रखने वाले बाबर (1526–1530) के दरबार में भारतीय दरबारियों का प्रारंभिक रूप देखा गया। बाबर के प्रशासन में भारतीय राजपूत और मुसलमान प्रमुख थे, जो भूमि प्रशासन और सैन्य नेतृत्व में लगे थे। बाबर के जीवन और कार्यकाल का विवरण बाबरनामा में मिलता है। बाबर के साथ काउर राजपूत योद्धाओं का प्रमुख योगदान था, जिन्होंने कई लड़ाइयों में बहादुरी दिखाई।संक्षेप में बाबर–काल में दरबार का स्वरूप लचीला था। स्थानीय नेताओं को सत्ता–संतुलन का साधन माना गया और उन्हें

राज्य निर्माण में शामिल किया गया। बाबर के दरबार में भारतीय विशेषकर हिंदू तत्व बहुत कम थे। बाबर को स्थानीय शासकों और राजपूत सरदारों का विरोध झेलना पड़ा। बाबरनामा से स्पष्ट होता है कि वह भारतीय सरदारों को पूरी तरह विश्वास में नहीं ले पाए। बाबर साहित्य और कविता के प्रेमी थे। उनके दरबार में फारसी भाषा का प्रयोग हुआ और धीरे-धीरे यह मुगल दरबार की प्रमुख भाषा बनी।[1]

हुमायूं काल का दरबार (1530-1540), (1555-1556)- बाबर के बाद हुमायूं सत्ता में आए। उनका शासनकाल अस्थिरता और संघर्षों से भरा रहा, किंतु दरबार के संदर्भ में कुछ नई प्रवृत्तियां दिखाई देती हैं। हुमायूं ने बाबर की तुलना में अधिक संगठित दरबार स्थापित करने की कोशिश की। उन्होंने दरबार को धार्मिक और ज्योतिषीय प्रतीकों से जोड़ दिया। वह ग्रह-नक्षत्रों के अनुसार दरबार की बैठकें करते थे।[2] हुमायूं ने कुछ हद तक हिंदू सरदारों और विद्धानों को दरबार में स्थान दिया। किंतु शेरशाह सूरी के संघर्ष के कारण उनका शासन स्थिर न रह सका।[3] हुमायूं चित्रकला और खगोलशास्त्र के प्रेमी थे। फारसी और मध्य एशियाई चित्रकारों को उन्होंने अपने दरबार में आश्रय दिया। बाद में यही परंपरा अकबर के समय में मुगल चित्रकला का आधार बनी। [4]

अकबर के दरबार के प्रमुख भारतीय दरबारी :

अकबर का दरबार परिवर्तनकारी था। यहां दो सुविधाएं शेष है:

1. **मनसबदारी प्रणाली का औपचारिक रूप से व्यवस्थित होना:** यह पद आधारित रैंक व्यवस्था थी। जिससे न केवल सैन्य बल का आंकलन होता था बल्कि वेतन/जागीर आबंटन के लिये भी मानक बनते थे। यह प्रणाली अमल में आईन-ए-अकबरी में विस्तार से वर्णित है।
2. **धार्मिक एवं सामाजिक समावेशन की नीति :** अकबर की नीतियों ने हिन्दू नायकों व ब्राह्मणों को राजकीय पदों पर बैठाया पर यह केवल धार्मिक उदारता नहीं बल्कि राजनैतिक रणनीति थी जिससे स्थानीय शक्ति नेटवर्क का समायोजन हुआ। अबुल फजल के आईन-ए-अकबरी में दरबार के बहुरंगी कर्मचारी वर्ग, राजस्व विभाग, रसोइघर से सम्बंधित विवरण है।[5]

मुगल शासन के महान शासक अकबर (1556-1605) के दरबार ने भारतीय दरबारियों की परिभाषा और संख्या को व्यापक बनाया। अकबर ने अपने दरबार में मुस्लिम और हिंदू दोनों समुदायों के कई प्रमुख व्यक्तियों को स्थान दिया। उनकी प्रसिद्ध 'नवरत्न' नौ रत्न में से कई भारतीय थे।

अकबर के दरबार की संरचना जिनकी जाति और पद इस प्रकार है:[6]

नाम	पद	जाति/धर्म
राजा बीरबल(महेशदास)	मंत्री, विद्धान	ब्राह्मण
राजा मानसिंह	सेना के सेनापति	राजपूत
राजा टोडरमल	वित्त मंत्री	ब्राह्मण
अब्दुर रहीम खानखाना	कवि, मंत्री	भारतीय मुस्लिम
मियां तानसेन(रामतनु पाण्डेय)	संगीतज्ञ	ब्राह्मण
वैद्य रामनारायण	मुख्य चिकित्सक	ब्राह्मण

राजा भारमल-अम्बर-जयपुर, कछवाहा राजपूत-अकबर ने उनसे वैवाहिक संबंध स्थापित कर उन्हें दरबार में उच्च मान-सम्मान दिया। कुटनीतिक सहयोग व सैन्य सहायता का कार्य किया।

भवानीदास- ब्राह्मण जाति के थे। दरबार में राजस्व अधिकारी का कार्य किया, कानूनगो और आमिल जैसे पदों पर नियुक्त हुए।[7]अकबर के शासन में हिंदू और मुस्लिम दरबारियों की संख्या लगभग बराबर थी, जिसने सामंजस्यपूर्ण साम्राज्य की नींव रखी।

जहांगीर1605-1627के दरबार में भारतीय दरबारियों की स्थिति : जहांगीर के दरबार में प्रभावशाली भारतीय दरबारी और नूरजहां का गुट प्रमुख थे। नूरजहां के पिता एत्माद्उद्दौला नूरजहां के पिता, सलाहकार और वित्त मंत्री, भाई आसफ खां नूरजहां के भाई, सेनापति और शाहजादा खुर्रम भविष्य के शाहजहां, सेनापति जैसे सदस्य उच्च पदों पर थे। कई राजपूत और मुस्लिम अधिकारी सैन्य व प्रशासनिक क्षेत्रों में कार्यरत थे।[8]

जगत सिंह राजपूत जाति के मेवाड़ से थे। जहांगीर के समय राजनीतिक संतुलन हेतु दरबारी सम्मान प्रदान किया गया था।[9]

शाहजहां 1628-1658के दरबार में भारतीय दरबारियों की स्थिति : शाहजहां के दरबार में राजपूत, ब्राह्मण और मुस्लिम दरबारी प्रशासन में सक्रिय थे। अनेक सैन्य और नागरिक पदों पर भारतीय जातियों के लोग नियुक्त थे।

प्रमुख दरबारी

चंद्रभान : ब्राह्मण जाति के थे। शाहजहां के निजी सचिव थे और फारसी भाषा के विद्धान थे।[10]

राजा रूप रमन : कायस्थ जाति के थे और चित्रकार परिवार से थे, मिनिएचर पेंटिग विद्यालय में प्रमुख भूमिका निभाई थी।[11]

राजा कामाराज सिंह : राजपूत सेनापति, मियां मीर सूफी संत और मंत्री, राजनीतिक सलाहकार थे, धार्मिक और आध्यात्मिक सलाहकार, दरबार की धार्मिक स्थिरता में मदद।दीवान इलाही बज्म वित्त और न्याय मंत्री प्रशासनिक वित्तीय व्यवस्था का संचालन।[12]

औरंगजेब 1658-1707के दरबार में भारतीय दरबारियों की स्थिति : औरंगजेब के काल में हिंदू दरबारियों की संख्या बढ़ी, खासतौर से राजपूत सेनापति एवं अधिकारी प्रशासकीय पदों पर रहे।

प्रमुख दरबारी

राय दुर्गादास : कायस्थ जाति के थे। औरंगजेब का राजस्व अधिकारी और प्रशासनिक सुधारक के रूप में अपना कार्य किया।[13]

राजा जय सिंह : आमेर के निवासी कछवाहा राजपूत थे औरंगजेब के दरबार में राजपूत सेनापति के रूप में दक्कन युद्धों में भागीदारी की तथा शिवाजी के साथ संधि/कैद किया था।[14]

राजा भूषण सिंह : राजपूत जाति के थे।[15]

राजा जसवंत सिंह : राजपूत जाति के जोधपुर के निवासी थे। मुगल सेनाओं में महत्वपूर्ण सेनापति थे। अफगानिस्तान और दक्षिण भारत अभियानों में योगदान दिया।[16]

18 वीं सदी मुगल पतन का दौर

राजा नवाब जयसिंह : सवाई कछवाहा राजपूत जाति के जयपुर के निवासी थे। औरंगजेब के बाद भी दरबार से सम्बद्ध रहे। ये खगोलशास्त्र और प्रशासन में योगदान दिया जयपुर में वेधशाला का निर्माण किया।[17]

राजा नवल राय : कायस्थ जाति के थे। मुगल दरबार में राजस्व अधिकारी के पद पर कार्यरत थे। अवधी क्षेत्र में कर वसूली का कार्य करते थे।[18]

बहादुर शाह जफर 1837-1857 - इस अवधि में मुगल साम्राज्य पतनशील था, परंतु स्थानीय राजपूत व मुस्लिम दरबारी सीमित अधिकारों के साथ कार्यरत थे। जिनमें स्थानीय सलाहकार, प्रशासनिक व सांस्कृतिक भूमिका निभाई।

हकीम अजमल खां : कायस्थ जाति के थे बाद में मुस्लिम बन गए थे मुस्लिम

चिकित्सक परिवार से जुड़े थे। अंतिम दौर में शाही हकीम तौर पर चिकित्सकीय सेवाएं दी।[19]

बहादुर शाह जफर का सांस्कृतिक दरबार

मीरजा गालिब: कायस्थ नवाब परिवार के थे। शाही पेंशनभोगी थे।

जौक: ब्राह्मण मूल से परिवर्तित मुस्लिम कवि थे। दरबारी कवि उस्ताद थे। इनका कार्य शाही काव्य व सांस्कृतिक जीवन को दिशा देना था।[20]

लक्ष्मीनारायण भट्ट: ब्राह्मण जाति के थे, बहादुरशाह प्रथम के समय धार्मिक और प्रशासनिक परामर्शदाता थे।[21]मुगल दरबार में अधिकांश उच्च पद जैसे वजीर, सेनापति, दीवान, कवि, विद्वान आदि पर परम्परागत रूप से राजपूत, ब्राह्मण, कायस्थ, पठान और फारसी मूल के लोग ही देखे जाते है। फिर भी तथाकथित नीची जाति के लोग दरबार से जुड़े हुए थे। मुगल शाही दरबार में शुद्र जातियों के प्रतिनिधियों को सीधे वजीर, सेनापति या नवरत्न जैसे पदों पर नहीं पाया जाता। इसका मुख्य कारण था उस समय का सामाजिक ढांचा और ब्राह्मण-राजपूत-कायस्थ प्रभुत्व।

सैनिक और प्रशासनिक निम्न स्तर पर योगदान: कई शुद्र समुदायों जैसे अहीर, गुर्जर, जाट, भील, मेव, धाकर ने मुगलों की सेनाओं में पैदल सैनिक, घुड़सवार और सीमांत सुरक्षा बल के रूप में कार्य किया।[22] उदाहरण औरंगजेब के समय अहीर सैनिकों का उल्लेख मआसिर-ए-आलमगिरी पुस्तक में भी दिया गया है।भील और गोंडों को जंगल सुरक्षा और शिकार/जासुस कार्य में दरबार से जुड़ा दिखाया गया है।[23]स्थानीय शासकों के जरिये अप्रत्यक्ष प्रतितिधित्व: कई बार शुद्र जातियों से आने वाले सैनिकों/मुखियों को स्थानीय स्तर पर जागीर या छोटे ठिकाने दिए गए। उदाहरण बुंदेलखंड और मालवा में धाकर और अहीर सरदारों को मुगल सूबेदारों ने सीमांत सुरक्षा के लिए नियुक्त किया।[24]जैसे जैसे मुगल सत्ता कमजोर हुई, शुद्र समुदायों से जुड़े जाट, मराठा और अहीर नेताओं ने स्वतंत्र शक्ति पाई। सुरजमल जाट, जाट परंपरागत रूप से कृषक/शुद्र वर्ग से माने जाते थे ने तो 18वीं शताब्दी में एक बड़ा राज्य ही स्थापित कर लिया और मुगल सम्राटों के साथ प्रत्यक्ष संधियां की।[25]

इसी तरह मालवा-नर्मदा क्षेत्र में कई अहीर-धाकर सरदार मुगल सेना का हिस्सा रहे।भारतीय दरबारियों ने प्रशासन, सैन्य, कला, साहित्य और चिकित्सा सभी क्षेत्रों में सक्रिय भूमिका निभाई।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. मुंशी देवीप्रसाद, बाबरनामा (बाबर की आत्मकथा अनुवाद), पृष्ठ 67-78
2. अबुल फजल, आइन-ए-अकबरी, खंड1, पृ.41-45
3. सतीश चंद्र, Medieval India, Vol.II, पृ.12-20
4. हुमायूंनामा गुलबदन बेगम, संपादित: ए.एस. बेवरिज, पृ. 77-84
5. अबुल फजल, आइन-ए-अकबरी, पृष्ठ 90-97
6. वही, पृष्ठ 150-200
7. Irfan Habib, Agrerian System of Mughal India, पृष्ठ 301-305
8. John F. Richards, Mughal Empier, पृष्ठ 119
9. तुजक-ए-जहांगीर-जहांगीर की आत्मकथा,पृष्ठ 100-130
10. Monier Williams, Mughal Administration, पृष्ठ 312
11. Ebba Koch, Mughal Art and Emperial Ideology, पृष्ठ 211
12. बनारसी प्रसाद सक्सेना-शाहजहां का इतिहास, पृष्ठ 80-120
13. Irfan Habib, Agrerian System of Mughal India, पृष्ठ 183
14. Sir Jadunath Sarkar, Shivaji and His Times, पृष्ठ 198
15. सर जदुनाथ सरकार, मुगल प्रशासन, पृष्ठ 105-115
16. John F. Richards, Mughal Empier, पृष्ठ 163
17. Irfan Habib, Agrerian System of Mughal Indiaअपेंडिक्स 2
18. Sir Jadunath Sarkar, Fall of Mughal Empier, Vol II, पृष्ठ 212
19. William Dalrymple, The Last Mughal, पृष्ठ 113
20. Satishchandra, Parties and Politics at The Mughal court, पृष्ठ 119
21. William Dalrymple, The Last Mughal, पृष्ठ 210-215
22. सर जदुनाथ सरकार-मआसिर-ए-आलमगिरी, पृष्ठ 421
23. अबुल फजल-आईन-ए-अकबरी खंड 2, पृष्ठ 235
24. Sir Jadunath Sarkar, Mughal Administration in Malwa, पृष्ठ 177
25. कालिका रंजन कानूनगो-जाट इतिहास, पृष्ठ 198

****